3 सच्चा हीरा

प्रस्तुत कहानी में व्यक्ति के ज्ञान के साथ-साथ उसके कर्म को भी महत्त्व दिया गया है। अच्छा ज्ञान, अच्छी बात है लेकिन वह आचरण में नहीं है तो, निरर्थक है। इस बात को रोचक तरीके से प्रस्तुत किया गया है।

सूर्य अस्त हो रहा था। पक्षी चहचहाते हुए अपने-अपने नीड़ की ओर जा रहे थे। गाँव की कुछ स्त्रियाँ पानी लेने के लिए घड़े लेकर कुएँ की ओर चल पड़ीं। पानी भरकर कुछ स्त्रियाँ तो अपने घरों को लौट गईं परन्तु उनमें से चार, कुएँ की पक्की जगत पर बैठकर आपस में इधर-उधर की बातें करने लगीं। बातचीत करते-करते बात बेटों पर जा पहुँची। उनमें से एक की उम्र सबसे बड़ी लग रही थी। वह कहने लगी, ''भगवान सबको मेरे बेटे जैसा बेटा दे। मेरा बेटा लाखों में एक है। उसका कंठ बहुत मधुर है। वह बहुत अच्छा गाता है। उसके गीत को सुनकर कोयल और मैना भी चुप हो जाती है। लोग बड़े चाव से उसका गीत सुनते हैं।''

उसकी बात सुनकर दूसरी स्त्री का मन हुआ कि वह भी अपने बेटे की प्रशंसा करे। उसने पहली स्त्री से कहा, ''मेरे बेटे की बराबरी कोई नहीं कर सकता। वह बहुत ही शक्तिशाली और बहादुर है। वह बड़े-बड़े बहादुरों को भी पछाड़ देता है। वह आधुनिक युग का भीम है।'' यह सब सुनकर तीसरी औरत भला कैसे चुप रहती? वह बोल उठी, ''मेरा बेटा साक्षात् बृहस्पति का अवतार है। वह जो कुछ पढ़ता है, एकदम याद कर लेता है। ऐसा लगता है मानो उसके कंठ में सरस्वती का निवास हो।''

तीनों औरतों की बातें सुनकर चौथी स्त्री चुपचाप बैठी रही। उसने अपने बेटे के बारे में कुछ न कहा। पहली ने उसे टोकते हुए कहा, ''क्यों बहन तुम क्यों चुप हो? तुम भी तो अपने बेटे के बारे में कुछ बताओ।'' चौथी स्त्री ने बड़े ही सहज भाव से कहा, ''मैं अपने बेटे की क्या प्रशंसा करूँ? वह न तो गंधर्व-सा गायक है, न भीम-सा बलवान और न ही बृहस्पति-सा बुद्धिमान।''

कुछ समय बाद जब वे सब घड़े सिर पर रखकर लौटने लगीं, तभी किसी गीत का मधुर स्वर सुनाई पड़ा। सुनकर पहली स्त्री बोली, ''सुनो, मेरा हीरा गा रहा है। तुम लोगों ने सुना, उसका कंठ कितना मधुर है?'' वह लड़का गीत गाता हुआ उसी रास्ते से निकल गया। उसने अपनी माँ की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। इतने में दूसरी स्त्री का बेटा उधर से आता दिखाई दिया। दूसरी स्त्री उसे देखकर गर्व से बोली, ''देखो, वह मेरा लाड़ला बेटा आ रहा है। शक्ति और सामर्थ्य में इसकी बराबरी कौन कर सकता है?'' वह यह कह ही रही थी कि उसका बेटा भी उसकी ओर ध्यान दिए बिना ही निकल गया।

वे कुछ आगे बढ़ीं तो एकाएक तीसरी स्त्री का बेटा उधर से संस्कृत के श्लोकों का पाठ करता हुआ निकला। उसके उच्चारण से ऐसा लग रहा था मानो उसके कंठ में साक्षात् सरस्वती विराजमान हों। तीसरी स्त्री ने गद्‌गद् स्वर में कहा, ''देखो, यही है मेरी गोद का हीरा। इसे कौन बृहस्पति का अवतार नहीं कहेगा?'' परन्तु उसका बेटा भी माँ की ओर देखे बिना आगे बढ़ गया।

वह अभी थोड़ी ही दूर गया था कि चौथी स्त्री का बेटा भी अचानक उधर से आ निकला। वह देखने में बहुत ही सीधा-सादा और सरल प्रकृति का लग रहा था। उसे देखकर चौथी स्त्री ने कहा, ''बहन यही मेरा लाल है।''

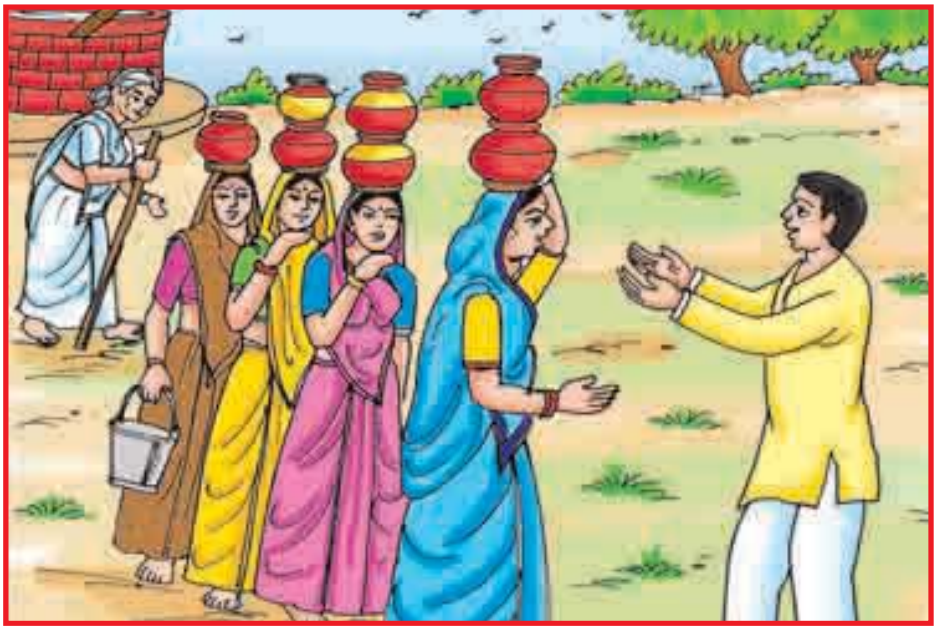

चौथी स्त्री उसके बारे में बता ही रही थी कि उसका बेटा पास आ पहुँचा। अपनी माँ को देखकर वह रुक गया और बोला, ''माँ, लाओ मैं तुम्हारा घड़ा पहुँचा दूँ।'' मना करने पर भी उसने माँ के सिर से पानी से भरा घड़ा उतारकर अपने सिर पर रखा और घर की ओर चल पड़ा।

तीनों औरतें बड़े ही आश्चर्य से चौथी स्त्री के बेटे को देखती रहीं। एक वृद्ध महिला जो बहुत देर से इन औरतों के पीछे चलती हुई इनकी बातें सुन रही थी, पास आकर बोली ''देखती क्या हो? यही 'सच्चा हीरा' है।''

शब्दार्थ

हीरा नररत्न, बहुत ही अच्छा आदमी **चहचहाना** चहकना, चहकारना **नीड़** घोंसला **कंठ** गला, आवाज, स्वर, शब्द **चाव** प्रबल इच्छा, लगन **प्रशंसा** तारीफ, गुण **बराबरी** तुलना, समता, समानता **सामर्थ्य** बल, योग्यता **पछाड़ना** हराना, पटकना या गिराना **आधुनिक** अर्वाचीन, नवीन **बृहस्पति** देवों के गुरु **साक्षात्** सामने, सम्मुख, प्रत्यक्ष, मूर्तिमान **निवास** घर, रहने का स्थान **टोकना** रोकना या पूछताछ करना **मधुर** मीठा **गर्व** अभिमान **प्रकृति** स्वभाव

मुहावरे

इधर-उधर की बातें करना गप्प मारना **लाखों में एक होना** विशिष्ट होना **पछाड़ देना** हराना-गिराना **बराबरी करना** मुकाबला करना **सच्चा हीरा होना** अच्छा आदमी होना

अभ्यास

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए :

(1) चौथी स्त्री का बेटा, सचमुच हीरा था। क्यों?

(2) अपने घर में आप माता-पिता को कौन-कौन से काम में मदद करते हैं?

(3) आदमी 'सच्चा हीरा' कैसे बन सकता है?

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों के बाद में तुरंत आनेवाले शब्द का अर्थ शब्दकोश में से ढूँढ़कर लिखिए :

(1) बपौती (2) व्यथा (3) नियति (4) प्रतिभा (5) शौर्य

(6) रुचि (7) बाँटना (8) क्षमा (9) उद्यान (10) अमन

प्रश्न 3. कहानी की चर्चा करके छात्रों से लेखन करवाएँ :

राजा का बीमार पड़ना - वैद्य की असफलता - किसी अनुभवी बूढ़े की सलाह - किसी सुखी मनुष्य का कुर्ता पहनो - राजा का कुर्ता खोजने जाना - मेहनती किसान को देखना - सुख का राज़ समझना।

प्रश्न 4. निम्नलिखित अपूर्ण कहानी को अपने शब्दों में [मौखिक एवं लिखित] पूर्ण कीजिए :

पुराने जमाने की बात है। कनकपुर देश के दरबारियों की ख्याति देश-विदेश में फैली हुई थी। उनकी बुद्धि की प्रशंसा सुनकर दूसरे देश के दरबारी उनकी परीक्षा लेने के लिए आए।

उसके एक हाथ में असली फूलों की माला थी और दूसरे हाथ में नकली फूलों की माला थी। उसने दरबारियों से कहा, ''श्रीमान क्या आप हाथ लगाये बिना बता सकेंगे कि इनमें से कौन-सी माला असली फूलों की है?''

सभी दरबारी आश्चर्य में पड़ गये। दोनों मालाएँ बिलकुल समान लग रही थीं। दरबारी के प्रश्न का उत्तर देना मुश्किल था। पर आखिर एक बुद्धिमान दरबारी खड़ा हुआ...

प्रश्न 5. निम्नलिखित कहानी का सारांश लिखिए :

नंदवन में एक छोटा सा तालाब था। तालाब के शीतल जल में राजहंस रहता था। वह बड़ा सुंदर था। उसी तालाब के पासवाले पेड़ पर दुष्ट कौआ रहता था। वह राजहंस की सुंदरता पर ईर्ष्या करता था।

एक दिन शिकारी थका हुआ तालाब के पास आया। उसने तालाब से पानी पिया और पेड़ के नीचे विश्राम करने लगा। उसे नींद आ गई। कुछ देर बाद शिकारी के मुँह पर धूप आने लगी। राजहंस को दया आ गई। राजहंस ने वृक्ष पर बैठकर अपने पंख फैला दिये। जिससे शिकारी के मुँह पर छाया आ गई। कौए से हंस की भलाई और शिकारी की सुखद नींद देखी नहीं गई। उसने शिकारी को परेशान करने का सोचा, ताकि शिकारी हंस को मार डाले। कौआ उड़ता हुआ शिकारी के पास गया और उसके सिर पर चोंच मारी और उड़कर दूर जा बैठा। शिकारी तुरंत जाग गया और क्रुद्ध हो गया। उसने पेड़ पर देखा तो राजहंस पंख फैलाए बैठा था। शिकारी ने सोचा, यह कार्य इसी हंस का है। उसने राजहंस को मारने के लिए बाण चलाया, लेकिन राजहंस उसकी आवाज़ सुनकर उड़ गया।

स्वाध्याय

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) पहली स्त्री ने अपने बेटे की प्रशंसा कैसे की?

(2) दूसरी स्त्री ने अपने बेटे की तारीफ़ में क्या कहा?

(3) तीसरी स्त्री ने अपने बेटे की विशेषता में क्या कहा?

(4) चौथी स्त्री ने अपने बेटे का परिचय कैसे दिया?

प्रश्न 2. निम्नलिखित उक्ति कौन, किसे कहता है, लिखिए :

(1) ''यही सच्चा हीरा है।''

(2) ''माँ, लाओ, मैं तुम्हारा घड़ा पहुँचा दूँ।''

(3) ''सुनो, मेरा हीरा गा रहा है।''

(4) ''देखो, यही है मेरी गोद का हीरा।''

(5) ''देखो, वह मेरा लाड़ला बेटा आ रहा है।''

भाषा-सज्जता

- **निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :**

(1) हम भी तुम्हारे साथ चलते हैं।
(2) आज स्कूल में छुट्टी है।
(3) रमेश बाग में खेलता है।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित किए गए 'चलते हैं', 'छुट्टी है', 'खेलता है' – ये शब्द क्रिया हो रही है, ऐसा बोध कराते हैं।

क्रिया के जिस रूप से क्रिया हो रही हो, ऐसा बोध होता हो, उसे 'वर्तमानकाल' कहते हैं।

- **निम्नलिखित वाक्यों में से 'वर्तमानकाल' की जानकारी देनेवाले शब्द को रेखांकित कीजिए :**

(1) मैंने उसे फूल दिया।
(2) मैं बाज़ार जाता हूँ।
(3) बच्चे मेदान में खेल रहे हैं।
(4) चूहे उछल-कूद कर रहे थे।
(5) वह विद्यालय जा रहा है।
(6) हम प्रयाग जायेंगे।

- **निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :**

(1) मीना कल मुंबई गई।
(2) हेमंत ने पत्र लिखा।
(3) माँ ने दीया जलाया।
(4) गीता ने पानी पिया।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित किए गए शब्द 'गई', 'लिखा', 'जलाया', 'पिया' – क्रिया पूरी हो गई है, ऐसा बोध कराते हैं।

क्रिया के जिस रूप से क्रिया हो गई हो, ऐसा बोध होता हो, उसे 'भूतकाल' कहते हैं।

- **निम्नलिखित वाक्यों में 'भूतकाल' की जानकारी देनेवाले शब्द को रेखांकित कीजिए :**

(1) मैंने उसे फल दिए।
(2) पिताजी अख़बार पढ़ रहे थे।

(3) गांधीनगर गुजरात में है।

(4) ये चित्र आपको कल दूँगा।

(5) यहाँ अक्सर सूखा पड़ता है।

(6) हम पहले सुरत में रहते थे।

(7) सोमनाथ ज्योतिर्लिंग है।

- **निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :**

(1) अब्दुल कल आएगा।

(2) लड़के शाम को खेलेंगे।

(3) मीना गुड़िया खरीदेगी।

(4) डाकिया डाक लाएगा।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित किए गए शब्द 'आएगा', 'खेलेंगे', 'खरीदेगी', 'लाएगा' – क्रिया होनेवाली है, ऐसा बोध कराते हैं।

क्रिया के जिस रूप से क्रिया होनेवाली हो, ऐसा बोध होता हो, उसे 'भविष्यकाल' कहते हैं।

प्रश्न 1. निम्नलिखित वाक्यों में से 'भविष्यकाल' की जानकारी देनेवाले शब्द को रेखांकित कीजिए :

(1) माली बाग में से फूल चुनेगा।

(2) हम हिन्दी सीखते हैं।

(3) पिंकल कल कहानी की किताब लाएगी।

(4) मैं शिक्षक बनूँगा।

(5) कोमल छठी कक्षा की छात्रा थी।

(6) अनिल कल पतंग उड़ाएगा।

(7) मैं बस में जा रहा था।

- **क्रिया के जिस रूप से क्रिया के समय, उसकी पूर्णता या अपूर्णता का बोध हो, उसे काल कहते हैं।**
- **काल के प्रमुख तीन भेद हैं : (1) वर्तमानकाल (2) भूतकाल (3) भविष्यकाल**

प्रश्न 2. निम्नलिखित वाक्यों से जिस काल का पता चलता हो, उनके सामने उस काल का नाम लिखिए :

(1) रोशनी ने कहानी सुनाई। _____

(2) हम परसों घूमने जाएँगे। _____

(3) पिताजी के जूते खो गए। _____

(4) मैं दादाजी के साथ मंदिर जाता हूँ। _____

(5) अनिता सातवीं कक्षा में पढ़ती है। _____

(6) मैं किताबें खरीदूँगी। _____

(7) बेटी पढ़-लिखकर दुनिया घूमेगी। _____

(8) हरि, रहीम से बात कर रहा था। _____

(9) मेरे पैरों में दर्द हो रहा था। _____

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों से उदाहरण अनुसार वर्तमानकाल, भूतकाल और भविष्यकाल का एक-एक वाक्य बनाइए :

उदाहरण : खेलना

- **वर्तमानकाल** - मैं खेलता हूँ।
- **भूतकाल** - मैं खेलता था।
- **भविष्यकाल** - मैं खेलूँगा।

शब्द : (1) पढ़ना (2) ऊड़ेलना (3) बटोरना (4) लिखना (5) सहलाना (6) सराहना

योग्यता विस्तार

- पुस्तकालय में से ध्रुव, प्रह्लाद, श्रवण, नचिकेता आदि की कहानियों की पुस्तकें पढ़िए।
- हमारे देश के महान सपूतों जैसे : गाँधी जी, स्वामी विवेकानंद, जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, सुभाषचंद्र बोस, लाल बहादुर शास्त्री, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, इंदिरा गाँधी, रानी लक्ष्मीबाई, डॉ. विक्रम साराभाई आदि के बचपन के बारे में पुस्तकालय में जाकर जानकारी प्राप्त कीजिए।
- बालभारती, बालसृष्टि, बालतरंग और चांदामामा जैसी पत्रिकाएँ पढ़िए।
- पुनीत महाराज रचित 'मा-बाप ने भूलशो नहीं' गुजराती गीत का गान कीजिए या टेपरिकार्डर के द्वारा सुनाइए।

◆

4 देश के नाम संदेश

पत्र के माध्यम से हम दूर बसे संबंधियों, परिवारजनों तथा मित्रों को अपनी बात आसानी से पहुँचा सकते हैं एवं सरकारी दफ्तरों में अपनी शिकायतें और आवेदन पहुँचा सकते हैं। आजकल दूरभाष, मोबाइल, तार, ई-मेल आदि से भी यह कार्य किया जाता है, फिर भी पत्र का अपना विशेष महत्त्व है।

हमारे पूर्व राष्ट्रपति एवं 'मिसाइलमेन' डॉ. अबुल पकीर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम ने नई दिल्ली से 19 मई 2005 के दिन 'क्या आपके पास देश के लिए दस मिनट है?' नाम से देश के नागरिकों को ई-मेल किया था। इसमें देशवासियों के मन में देशाभिमान की भावना उत्पन्न हो, ऐसी सीख भी है।

मातृछाया, ऊँची शेरी,
गाँव - मेसपुरा,
तहसील - भाभर,
जिला - बनासकांठा,
दिनांक - 24-12-2011

प्रिय मित्र हर्ष,

नमस्ते।

मैं यहाँ सकुशल हूँ। आशा है वहाँ सभी सकुशल होंगे।

तुम्हारा खत मिला, पढ़कर खुशी हुई। मैंने डॉ. अब्दुल कलाम का देशवासियों के नाम भेजा गया एक ई-मेल पढ़ा, वही तुम्हारे लिए प्रेषित कर रहा हूँ।

''डॉ. कलाम अपने संदेश की शुरुआत में ही पूछते हैं, क्या आपके पास अपने देश के लिए दस मिनट का समय है? यदि हाँ, तो इसे पढ़िए वरना मरज़ी आपकी। (इसके बाद वह देश के लोगों की सोच बताते हुए कहते हैं -

- आप कहते हैं - हमारी सरकार निकम्मी है।
- आप कहते हैं - हमारे कानून पुराने पड़ गए।
- आप कहते हैं - नगरपालिका कचरा नहीं उठाती।
- आप कहते हैं - फोन काम नहीं करता, रेलवे मजाक बन गई है, एयरलाइन दुनिया में हमारी ही सबसे खराब है, चिट्ठी अपनी मंजिल तक नहीं पहुँचती।